"सिर्फ पड़ना झखणा झाख"

- पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ । पड़ि पड़ि बेड़ी पइऐ पड़ि पड़ि मडीअहि खात ।

अर्थः- अगर इतनी पोथियां पढ़ लें, जिनसे कई गड्डियां लादी जा सकें, जिनके ढेरों के ढेर लगाए जा सकें अगर इतनी पुस्तकें पढ़ जायं, जिनसे एक बेड़ी भरी जा सके, कई गड्ढे भरे जा सकें

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास । पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ।

अर्थः- अगर पढ़ - पढ़ के सालों के साल गुजारे जाएं अगर पढ़ - पढ़ के साल के सारे महीने बिता दिए जाएं अगर पुस्तकें पढ़ - पढ़ के सारी उम्र गुजार दी जाए, और पढ़ - पढ़ के सारे स्वास गुजार दिए जाएं तो भी ईश्वर के दरबार में इस में से कुछ भी स्वीकार नहीं होता ।

नानक लेखै इक गल होर हउमै झखणा झाख । 1। म0-1।

अर्थः- हे नानक ! प्रभु की दरगाह में केवल प्रभु की महिमा स्वीकार होती है, प्रभु की बड़ाई के बिना कोई उद्यम करना अपने अहंकार में ही भटकते फिरना है ।

लिखि लिखि पड़िआ । तेता कडिआ । बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ।

अर्थः- जितना कोई मनुष्य किसी विद्या को लिखना - पढ़ना जानता है, उतना ही उसे अपनी विद्या पे घमण्ड है सो, यह जरूरी नहीं कि ईश्वर के दर पे स्वीकार होने के लिए विद्या की जरूरत है जितना ही कोई बहुत तीर्थों की यात्रा करता है, उतना ही जगह - जगह पे बताता फिरता है कि मैं फलाने तीर्थ पर स्नान कर आया हूँ । सो, तीर्थ यात्रा भी अहंकार का कारण बनती है ।

बहु भेख कीआ देही दुख दीआ । सहु वे जीआ अपणा कीआ । अंन न खाइआ साद गवाइआ ।

अर्थः- किसी ने लोगों को रिझाने के लिए धर्म के कई चिन्ह धारण किए हुए हैं, और कोई अपने शरीर को कष्ट दे रहा है उसके लिए भी यही कहना ठीक है कि हे भाई ! अपने किए का दुख सह भाव, ये वेश धारन करने, शरीर को दुख देने भी ईश्वर के दर पर स्वीकार नहीं हैं ।

बहु दुख पाइआ दूजा भाइआ। वस्त्र न पहिरै अहिनिस कहरै । मोनि विगूता किउ जागै गुर विन सूता । पग उपेताणा अपणा कीआ कमाणा ।

अर्थः- और देखो, जिसने अन्न छोड़ा हुआ है प्रभु का स्मरण नहीं करता, स्मरण त्याग के उसे यही अच्छा काम लगता है । उसने भी अपनी जिंदगी तल्ख बनाई हुई है और दुख सह रहा है । कपड़े नहीं पहनता, दिन - रात दुखी हो रहा है । एकांत में चुप रह के असली राह से टूटा हुआ, भला बताओ माया की नींद में सोया हुआ मनुष्य गुरु के बिना कैसे जाग सकता है ?

अल मल खाई सिरि छाई पाई । मूरखि अंधै पति गवाई । विण नावै किछ थाई न पाई ।

अर्थः- एक पैरों से नंगा फिरता है और अपनी इस की हुई भूल का दुख सह रहा है । साफ - बढ़िया भोजन छोड़ के झूठ - मीठ खाता है, और सिर पर राख डाल रखी है, अज्ञानी मूर्ख ने इस तरह अपनी इज्जत गवा ली है । प्रभु के नाम के बिना और कोई उद्यम स्वीकार नहीं है ।

रहै बेबाणी मड़ी मसाणी । अंध न जाणै फिरि पछताणी । सतिगुर भेटे सो सुख पाए । हरि का नाम मनि वसाए ।

अर्थः- अंधा मूर्ख उजाड़ों में, मढ़ियों में, मसाणों में जा रहता है, ईश्वर वाला रास्ता नहीं समझता और समय बीत जाने पर पछताता है । जिस मनुष्य को गुरु मिल गया है असल सुख वही पाता है, वह भाग्यशाली ईश्वर का नाम अपने हृदय में टिकाता है ।

नानक नदरि करे सो पाए । आस अंदेसे ते निहकेवल हउमै सबदि जलाए ।2।

अर्थः- पर हे नानक ! गुरु भी उसी को ही मिलता है जिस पे आप दातार मेहर की नजर करता है । उस संसार की आशाओं और फिक्रों से निर्लिप हो के गुरु के शब्द द्वारा अपने अहम को जला देता है ।

भगत तेरे मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे । नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ।

अर्थः- हे प्रभु ! तुझे अपने मन में भक्त प्यारे लगते हैं, जो तेरी महिमा कर रहे हैं और तेरे दर पर शोभा पा रहे हैं । हे नानक ! भाग्यहीन मनुष्य भटकते फिरते हैं, उन्हें प्रभु के दर पर जगह नहीं मिलती क्योंकि ये विचारे अपने असल को नहीं समझते, ईश्वरीय गुणों की पूंजी अपने अंदर हुए बिना ही अपने आप को बड़ा जतलाते हैं ।

इकि मूल न बुझन्हि आपणा अणहोदा आप गणाइदे । हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे । तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ।9। (1-467-468)

अर्थः- हे प्रभु ! मैं नीच जाति वाला तेरे दर का एक अदना सा ढाढी हूँ, और लोग अपने आप को ऊँची जाति वाला कहलवाते हैं । जो तेरा भजन करते हैं, मैं उनसे तेरा 'नाम' मांगता हूँ ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"